लोकतन्त्र

A) लोकतन्त्र शासनप्रणाली, सामाजिक व्यवस्था और जीवनमूल्य के रूप में।

B) लोकतन्त्र का समकालीन विकास –

(i) वोट केन्द्रित लोकतन्त्र के बजाय विमर्शी लोकतन्त्र

(ii) सहभागी लोकतन्त्र

(iii) नगर राज्यो से सर्वदेशीय लोकतन्त्र का विकास

(C) लोकतन्त्र की यथार्थवादी मॉडल (उदारवादी मॉडल) – विशिष्टवर्गवादी, बहुलवादी सिद्धान्त

(D) लोकतन्त्र व विकास का सम्बन्ध

(E) लोकतन्त्र का स्वतन्त्रता, समानता, अधिकारों के साथ सम्बन्ध

F) समकालीन विश्व मे लोकतन्त्र के विकास का चरण

G) लोकतांत्रिक शांति का सिद्धान्त – ~~[illegible]~~ माइकल डोल

लोकतन्त्र का मूलभूत अभिप्राय

लोकतन्त्र उतना ही पुराना शब्द है जितना यूनानी युग का ~~[illegible]~~ चिन्तन

+

DEMOS + KRATIA

⇒ यूनानी युग मे लोकतन्त्र प्रत्यक्ष लोकतन्त्र था।

⇓

यूनानी युग मे लोकतन्त्र को भीड़तंत्र, मूर्खों, निर्धन का शासन कहा जाता था।

यूनानी युग

मध्यकाल ⇓	
विशेषाधिकारों का युग, राजतन्त्र था – पोपशाही – राजशाही थी। – राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्तो को मान्यता दी जाती थी।	लोकतन्त्र के नकारात्मक अर्थ पोपशाही, राजशाही विशेषाधिकारों के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी।

लोकतंत्र मूलतः
एक शासन प्रणाली है। ~~लोकतन्त्र का अभिप्राय~~ इसकी ~~विशेषताएं निम्न हैं —~~

1) सहमति पर आधारित शासन — लॉक के विचार
2) उत्तरदायी शासन — लॉक, बेंथम के विचार — एक व्यक्ति एक वोट (केवल सम्पत्तिशाली लोगों को मत का अधिकार)
3) प्रतिनिधिक शासन
4) विधि का शासन
5) बहुमत का शासन → यद्यपि लोकतन्त्र में प्रत्येक व्यक्ति का महत्व होता है लेकिन निर्णय निर्माण हेतु ही बहुमत का प्रयोग किया जाता है।
6) अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा

→ लोकतन्त्र का प्रक्रियात्मक पक्ष

लोकतन्त्र का आदर्शवादी आधार

1. स्वतन्त्रता — मिल
2. समानता — ~~स्वतंत्रता~~, ग्रीन, लास्की अमर्त्यसेन, जॉन रॉल्स
3. न्याय — रॉल्स, ओकिन

→ लोकतन्त्र का मूल या तत्वात्मक अर्थ या दार्शनिक, आदर्शी अर्थ या मूल्यों के रूप में लोकतन्त्र

इन्हीं आदर्शों की प्राप्ति हेतु ही लोकतन्त्र में उपर्युक्त साधनों का प्रयोग किया जाता है।

⇒ लोकतन्त्र समाज के रूप में

a) जहाँ बहुमत अल्पसंख्यकों पर अत्याचार न करे।

b) जाति, धर्म, लिंग के आधार पर व्यक्तियों के मध्य स्वाभाविक रूप से भेदभाव न किए जाए।

लोकतन्त्र एक जीवनशैली के रूप में

a) प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके विचारों का सम्मान करना।

b) दूसरे के विचार, जीवनशैली के प्रति सहिष्णु होना।

⇓

मिल → "लोकतन्त्र मूलतः एक जीवनशैली है।"

मैम्फर्सन → लोकतन्त्र एक जीवनशैली है

डेविड हेल्ड
रॉबर्ट पुटनम → लोकतंत्र के विकसित होने का मूल अभिप्राय नागरिकता के सद्गुण का होना है।

Q.1 लोकतन्त्र एक शासनप्रणाली, समाज का एक रूप और उससे बढ़कर जीवन पद्धति और शिक्षाप्रणाली है। चर्चा कीजिए।

Q.2. लोकतन्त्र का तत्वात्मक अर्थ उन मूल्यों में अन्तर्निहित है जिनकी प्राप्ति के लिए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। कथन पर चर्चा कीजिए।

Q.3. लोकतन्त्र का अभिप्राय बहुमत का शासन नहीं बल्कि अल्पसंख्यकों का समान महत्व और उससे बढ़कर प्रत्येक व्यक्तियों के महत्व को स्वीकार करना है। कथन को सविस्तार समझाइए।

परिचर्चात्मक ~~विमर्शी~~ लोकतन्त्र

परिचर्चा, संवाद

⇓

1. परिचर्चा करने वाला व्यक्ति – "नैतिक" है।
2. व्यक्ति का परिचर्चा का मूल उद्देश्य – सार्वजनिक भलाई होना चाहिए।
3. परिचर्चा आमने सामने होनी चाहिए।
   परिचर्चा मे सभी शामिल होने चाहिए।
4. परिचर्चा का स्थान – सार्वजनिक स्थान होना चाहिए।

परिचर्चा में आने वाली बाधाएँ

- पूंजीवाद ने परिचर्चा के स्थान को समाप्त कर दिया है।
- आज के इस युग मे लोगो के पास परिचर्चा के लिए समय नही है।
- लोगो ने राजनीतिक के बजाय आर्थिक जीवन को ज्यादा महत्व देना शुरू कर दिया है।

हैबरमास ने मीडिया को cultural Industry कहा उन्होंने

कहा कि मीडिया ऐसी कृत्रिम मांगो को पैदा कर रही है जिसकी आवश्यकता व्यक्ति को है ही नहीं। व्यक्ति का उद्देश्य भौतिक मांगो को पूरा करना ही रह गया है।

⇒ आम लोगो की परिचर्चा संसद की परिचर्चा तक Transfer हो जाए यही वास्तविक लोकतन्त्र है।
सड़क से संसद तक।

हैबरमास ने पूंजीवादी व्यवस्था के मनोवैज्ञानिक दुष्परिणामो को ज्यादा देखा आर्थिक दुष्परिणामों को कम।

<u>परिचर्चात्मक लोकतन्त्र</u> :-

लोकतन्त्र की परम्परागत मान्यता के अन्तर्गत वोट केन्द्रित लोकतन्त्र को महत्व दिया गया परन्तु परिचर्चात्मक लोकतन्त्र के समर्थकों ने लोकतन्त्र को बातचीतकेन्द्रित बनाने का प्रयत्न किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अधिकांश लोगों ने लोकतन्त्र को वोटिंग के विशेष परिप्रेक्ष्य मे ही समझा। इसके अनुसार नागरिकों के पास कुछ निश्चित वरीयताएँ हैं और इन वरीयताओं को लोग राजनीतिक प्रक्रिया से स्वतन्त्र रूप से पहले ही तय कर लेते हैं। मतदान की प्रक्रिया को सिर्फ निष्पक्ष निर्णय प्रक्रिया उपलब्ध कराने वाला माना जाता था। और लोगों की वरीयताओं को सार्वजनिक निर्णय में बदलने के लिए एक <u>गणनात्मक संयंत्र</u> का प्रयोग किया गया।

वर्तमान युग में यह मानने वालों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है कि लोकतंत्र की यह गणनात्मक या वोटकेन्द्रित संकल्पना लोकतांत्रिक वैधता के मानकों को पूर्ण नहीं कर सकती क्योंकि लोकतंत्र में यह माना जाता है कि लोगों की वरीयताएँ

स्वतन्त्र रूप से राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा बनती है।
इसलिए उनके द्वारा नागरिकों को ऐसा कोई अवसर उपलब्ध नहीं होता जिससे वे दूसरों को अपने दृष्टिकोण की अच्छाई या दावे की वैधता के बारे में सहमति करने की कोशिश कर सकें

इसके द्वारा नागरिकों को कोई ऐसा अवसर नहीं मिलता जिससे वे स्वार्थ, पूर्वाग्रह, अज्ञानता और कभी कभार उभरने वाले मनमाने विचारों पर आधारित दावों और न्याय या बुनियादी जरूरतों पर आधारित सिद्धान्तों में अन्तर कर सकें। उनके अनुसार इस प्रक्रिया में कोई सार्वजनिक आयाम भी नहीं है क्योंकि गणनात्मक वोट केन्द्रित मॉडल में लोगों से यह उम्मीद नहीं की जाती कि वे सार्वजनिक स्थानों पर मिलकर अपने दावों पर विवेचना और वाद - विवाद करें। और इस तरह के वाद विवाद को कोई प्रोत्साहन नहीं देता उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि नयी तकनीक के साथ गणनात्मक लोकतन्त्र का ऐसा विकास भी संभव है जिसमे नागरिक वोट डालने के लिए भी अपने घर से बाहर न निकलें और इन्टरनेट के द्वारा वोट कर दें।

इसलिए लोकतन्त्र के गणनात्मक मॉडल में चुनाव परिणामों में वैधता का एक बहुत ही बारीक आवरण निर्मित होता है यह विजयी और पराजित को निर्धारित करने के लिए एक साधन उपलब्ध कराता है लेकिन आम सहमति के विकास, लोकतन्त्र के निर्माण यहाँ तक कि सम्मानजनक समझौते के लिए भी कोई साधन उपलब्ध नहीं कराया जाता। उन नागरिकों पर विचार करें जो यह मानते हैं कि न्याय का उनका दावा न्याय के बुनियादी सिद्धान्तों पर आधारित है लेकिन फिर भी वे गणनात्मक लोकतन्त्र में हार जाते हैं क्योंकि उन्हें अपने दावों के लिए दूसरों को सहमत करने का कोई

अवसर नहीं मिलता और दूसरो को यह भी अवसर नही मिलता कि वे उन्हे इस बात के लिए सहमत करें कि उनका दावा गलत है। उन्हे केवल यह बताया जाता है कि वे अल्पमत मे हैं और पराजित हैं।

परम्परागत गणनात्मक बहुमतवादी लोकतन्त्र में अल्पसंख्यको के मतों की पूर्णतया उपेक्षा हो जाती है और अल्पसंख्यकों को पहले से ही पता होता है कि उन्हे वोट मिलने की बहुत कम उम्मीद है इसलिए वे समूह व्यवस्था के भीतर सत्ता के किसी प्रकार के प्रयोग से हमेशा के लिए बाहर हो जाते हैं।

वोट केन्द्रित दृष्टिकोण की कमियों से उभरने के लिए लोकतन्त्र के सिद्धान्तकारों ने मतदान से पहले विचार-विमर्श और जनमतनिर्माण की प्रक्रिया पर तेजी से ध्यान देना शुरू किया। इन लोगो ने मतदान केन्द्र के बजाय नागरिक समाज मे होने वाले विचारविमर्श पर ध्यान केन्द्रित किया। लोकतन्त्र के इस नए मॉडल के संस्थापको मे एक ड्राइजेक ने इसे लोकतन्त्रीय सिद्धान्त के विमर्शी परिवर्तन या विमर्शी लोकतन्त्र की संज्ञा दी और इसका आरम्भ 1990 के आसपास हुआ। इन सिद्धान्तकारों के अनुसार लोकतन्त्र के इस परिचर्चात्मक मॉडल में हर व्यक्ति को विचार अभिव्यक्त करने और उस पर सोचविचार करने का अवसर मिलेगा। लोग सामान्य रूप से विचार विमर्श करने के अनुभव से गुजरेंगे इससे पारस्परिक समझदारी और सहानुभूति को बढ़ावा मिलेगा। विमर्शी लोकतन्त्र में हम धोखेबाजी करके, गलत बात बताकर, प्रोपेगण्डा करके, छल करके (प्रपंच) यह धमकी देकर दूसरे के व्यवहारों को परिवर्तित नहीं करेंगे।